**हिन्दी विभाग,**

**त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर**

द्वारा आयोजित

एवं

**केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, शिलाँग**

तथा

**नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ओएनजीसी, अगरतला**

द्वारा प्रायोजित

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

# "भारतीय भाषाओं में लोक-साहित्य"

दिनांक : 17-18 मार्च, 2017

समय : 11 बजे, पूर्वाह्न

आयोजन-स्थल :

सभागार, अकादमिक भवन संख्या-11

त्रिपुरा विश्वविद्यालय

**आयोजन समिति**

संरक्षक :

**प्रो. अंजन कुमार घोष**

माननीय कुलपति

त्रिपुरा विश्वविद्यालय

अध्यक्ष:

**प्रो.सत्यदेव पोद्दार**

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग

एवं संकायाध्यक्ष, कला एवं वाणिज्य

संयोजिका :

**डॉ. मिलन रानी जमातिया**

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

मो. 08974009245

आयोजन-सचिव :

**डॉ. जय कौशल**

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

मो. 09612091397

## संगोष्ठी का उद्देश्य-

लोक साहित्य किसी भी देश के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास का ऐसा मौखिक दस्तावेज होता है, जिसमें समस्त लोक-जीवन का सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदि का प्रतिबिंबन देखा जा सकता है। लोक-गीत, लोक-गाथा, लोक-कथा और लोक-नाट्य जैसे लोक-साहित्य के कई भेद हैं, जिन्हें संरक्षित और संवर्धित करने में पुरुषों से अधिक महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेकिन मुश्किल यह है कि हम सब अपनी मातृभाषाओं में मौजूद लोक-साहित्य के विविध रूपों से तो थोड़ा-बहुत परिचित होते हैं, पर इसके अलावा अन्य भाषाओं में मौजूद लोक-साहित्य एवं उसके रूपों से हमारा परिचय नहीं के बराबर होता है लेकिन इधर कुछ समय से लोक-साहित्य की महत्ता के प्रति जागरुकता बढ़ी है और व्यक्तिगत एवं सांस्थानिक दोनों स्तरों पर उसके संरक्षण और अभिलेखन के प्रयास शुरू हो गए हैं। जाहिर है, सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं के लोक-साहित्य के मध्य परस्पर संवाद आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, ताकि भारतीय-साहित्य, विश्व-साहित्य एवं तुलनात्मक साहित्य जैसी अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में न केवल लोक-साहित्य के संदर्भों को समझा जा सके, वरन् पूर्वोत्तर सहित देश की सभी छोटी-बड़ी भाषाओं में सदियों से उपलब्ध लोक-साहित्य में पारम्परिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर एकता एवं विविधता के सूत्रों की पहचान हो सके।

इसी को ध्यान में रखकर त्रिपुरा विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केन्द्र तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ओएनजीसी, अगरतला के सहयोग से **'भारतीय भाषाओं में लोक-साहित्य'** विषय पर आगामी 17-18 मार्च, 2017 को द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। उम्मीद है, प्रस्तुत संगोष्ठी भारतीय भाषाओं के लोक-साहित्य के विभिन्न पक्षों की एक मंच पर चर्चा कराकर साहित्य एवं संस्कृति के एक बड़े अभाव की पूर्ति में सहायक होगी| विषय की व्यापकता को देखते हुए इसे निम्नलिखित उप-विषयों में बाँटा गया है:

1. भारतीय भाषाओं में लोकगीत एवं लोक-गाथाएँ : परंपरा एवं प्रयोग
2. भारतीय भाषाओं में लोककथाएँ: परंपरा एवं प्रयोग
3. भारतीय भाषाओं में लोक-नाट्य : परंपरा एवं प्रयोग
4. भारतीय भाषाओं में लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कृति : विमर्श
5. भारतीय भाषाओं का सिनेमा और लोक-साहित्य
6. पूर्वोत्तर भारत का लोक-साहित्य : विविध विधाएँ

नोट: उपर्युक्त विषयों के अलावा भारतीय भाषाओं में लोक-साहित्य से संबंधित अन्य मुद्दों पर भी आलेखों का स्वागत है। ईमेल द्वारा संगोष्ठी-प्रपत्र सारांश (Abstract) दिनांक 08/03/2017 तक और पूर्ण आलेख (Full paper) दिनांक 15/03/2017 तक स्वीकार किए जा सकेंगे। अध्यापकों के लिए पंजीकरण शुल्क 700 रुपए और शोधार्थियों के लिए 500 रुपए निर्धारित है। कृपया अपने आलेख **milanrani08@tripurauniv.in** एवं **jaikaushal@tripurauniv.in** पर ईमेल करें।